Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९४ ASG
६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

❀ ओ३म् ❀

पुस्तक की संख्या ...२४/६२

पुस्तकालय-पंजिका-संख्या ...२६.९

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगा...
है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्...
अपने पास नहीं रख सकता। अधिक देर तक रखने के
लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

COMPILED

* ओ३म् *

अथ मरुत्सूक्तम्

लेखक

बुद्धदेव विद्या

77.4.11
27626

प्रकाशक

पण्डित बुद्धदेव विद्यालङ्कार

गुरुदत्त भवन, लाहौर

प्रथम वार १०००

चैत्र १९८८

मूल्य ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

98/62 16 6 26 V.V.18 उस्तकालय

ओ३म्

ऋग्वेद में मरुत्

गुरुकुल कांगड़ी

ऋग्वेद में मरुत् सम्बन्धी ३९ सूक्त हैं उनकी तालिका इस प्रकार है:—

१	प्रथम मण्डल	षष्ट सूक्त (४,६,८,१,५,७ मन्त्र)
२	,,	१९
३	,,	३७
४	,,	३८
५	,,	३९
६	,,	६४
७	,,	८५
८	,,	८६
९	,,	८७
१०	,,	८८
११	,,	१६५
१२	,,	१६६
१३	,,	१६७
१४	,,	१६८
१५	,,	१७१
१६	,,	१७२
१७	द्वितीय मण्डल	३४ सूक्त

CHECKED 1973 Initial

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८	पञ्चम मण्डल	५२ सूक्त
१९	”	५३
२०	”	५४
२१	”	५५
२२	”	५६
२३	”	५७
२४	”	५८
२५	”	५९
२६	”	६०
२७	”	६१
२८	”	८७
२९	षष्ठ मण्डल	६६ सूक्त
३०	सप्तम मण्डल	५६ सूक्त
३१	”	५७
३२	”	५८
३३	”	५९
३४	अष्टम मण्डल	सप्तम सूक्त
३५	”	२०
३६	”	९४
३७	”	९० (१४ मं)
३८	दशम मण्डल	३६ सूक्त
३९	”	७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
28/62
COMPILED

इसके अतिरिक्त कुछ मन्त्र यत्र तत्र विखरे हुए भी हैं जिनकी संख्या अत्यल्प है।

मरुत् के विषय में सब से पहिला प्रश्न जिसका हमें निर्णय करना है. वह यह है कि क्या यह मरुत् कोई अलौकिक जीव हैं अथवा हम आप सरीखे मनुष्य।

इस प्रश्न का निर्णय करने के लिये हम सब से पहिली वात यह उपस्थित करते हैं कि इन्हें

प्रथम मण्डल	३७ सूक्त	६ मन्त्र
,,	३२ ,,	३ ,,
,,	६४ ,,	४—१०
,,	८५ ,,	८ ,,
,,	११६ ,,	१३ ,,
द्वितीय मण्डल	३६ सूक्त	२ मन्त्र
पञ्चम मण्डल	५२ सूक्त	५ मन्त्र
,,	,,	६ मन्त्र
,,	,,	११ ,,
,,	५४ ,,	३ ,,
,,	५७ ,,	८ ,,
,,	५६ ,,	२ ,,
,,	,, ,,	३ ,,
,,	,,	५ ,,
,,	६१	१ म०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षष्ठ मण्डल	४६ सूक्त	११ म०
सप्तम मण्डल	५६ सूक्त	१ म०
अष्टम मण्डल	२० सूक्त	६ म०
२ ,,	,,	७ म०

इन अठारह स्थानों पर नरः कहा गया है. हो सकता है कि जिस यौगिक वाद के कारण आर्य समाज का सदा उपहास किया जाता है. अपना प्रयोजन सिद्ध होता देख कर प्रतिवादी उस की ही शरण ले कर नरः का अर्थ नेतारः ऐसा करने लगे इस लिये अब हम दूसरा इस से भी अधिक स्पष्ट शब्द उपस्थित करते हैं.

इन्हीं मरुतों को

प्रथम मण्डल	६४ सूक्त	२ मन्त्र
पञ्चम मण्डल	५३ सूक्त	३ मन्त्र
,,	५६ ,,	६ मन्त्र
सप्तम मण्डल	५६ सूक्त	१ मन्त्र

इन चार स्थलों पर मर्य्याः कहा गया है. यही नहीं पञ्चम मण्डल ५३ सूक्त ३ तन्त्र में तो नरो मर्य्याः अरेपसः इमान् पश्यन्नितिष्टुहि इस प्रकार ष्टुहि यह लोट् लकार का स्पष्ट प्रयोग पड़ा है इस की विद्यमानता में अन्य सैकड़ों प्रमाण भी विधि वाक्य के प्राधान्य के कारण अति दुर्बल हो जांयगे इस वाक्य का अर्थ है कि इन मरुतों को मरण धर्म्मा पाप रहित मनुष्य ऐसा कह. इस स्पष्ट आज्ञा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरुद्ध जो इन्हें अलौकिक पुरुष कहता है वह वेद विरुद्ध अर्थ करता है.

यहीं तक नहीं. प्रथम मण्डल के ३८ सूक्त में तो स्पष्ट उन के मरण का वर्णन है मन्त्र इस प्रकार है

यद्यूय मृष्टिं मातरो मर्त्तासः स्यातन स्तोता वो अमृतः स्यात्। १. ३८. ४.

हे पृश्नि माता के पुत्र तुम जब मरते हो तो उस मृत्यु के गीत गा गा कर गाने वाले अमर हो जाते हैं।

अब जानना है कि यह ऐसी विलक्षण मृत्यु मरने वाले मनुष्य कौन हैं.

इसका उत्तर

प्रथम मण्डल सूक्त १६ मं०५

षष्ठ मण्डल सूक्त ४६ मं० १

इन दो स्थलों पर दिया गया है. इन दोनों मन्त्रों में उन्हें सुक्षत्रासः कहा गया है.

इतने से भी वेद का आशय पूरा नहीं मिलता. एक और शब्द है जिसके मिलाने से वेद का आशय स्पष्ट होगा. वह शब्द है. गण.

प्रथम मण्डल के षष्ठ सूक्त के अष्टम मन्त्र में मरुतों को कहा गया है. गणै रिन्द्रस्य काम्यैः यहां गणैः और इन्द्रस्य काम्यैः यह दोनों ही विशेषण बड़े मार्मिक हैं वह अकेले अकेले बिखरे सिपाही नहीं हैं किन्तु गण हैं उन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्पर मिल कर एक गण के स्वार्थ के लिये अपने स्वार्थ को वलिदान करने की अपने आप को गणसात् कर देने की भावना रच चुकी है जिस भावना की परिसमाप्ति गणपति इन्द्र में होती है. इसी लिये कहा कि वह इन्द्र के प्यारे गण हैं.

अब स्पष्ट हुआ कि मरुत् लोग सैनिक हैं अब उनका स्वरूप एक एक विशेषण से किस प्रकार उन्मीलित होता जाता है. यह क्रमशः विशेषणों की शृङ्खला की कड़ियों के जोड़ने से स्पष्ट होता जायगा प्रथम मण्डल १६ सूक्त चतुर्थ मन्त्र में इन्हें उग्राः तथा ओजसा अनाधृष्टाः (unmolested) कहा गया है. अर्थात् वह बड़े उग्र और अपनी ओजस्विता के कारण किसी से दबने वाले नहीं ! कोई उन का धर्षण कोई नहीं कर सकता

प्रथम मण्डल सूक्त १६ में लिखा है.

य ईङ्ख यन्ति पर्व्वतान्, तिरः समुद्र मर्णवम् ।

जो पर्व्वत और समुद्रों को लांघते हैं सायण ने इस का अर्थ पर्व्वतों को चालयन्ति कंपाते हैं ऐसा किया है किन्तु इस में उसे तिरः में कुर्व्वन्ति का अध्याहार करना पड़ा है यदि ईङ्ख यन्ति को दोनों के साथ लगाकर समुद्रम् पर्व्वतान् तिरः ईङ्खयन्ति ऐसा करलें तो कदाचित् और सुसङ्गत हो.

सायण के अनुसार भी मान लें तो कोई हानि नहीं जो पर्व्वतों को कम्पायमान करते हैं और समुद्र का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिरस्कार करते हैं. यह विशेषण भी सैनिकों में सुचारु रूप से सङ्गत होते हैं १ फिर ३७ सूक्त ७ मन्त्र इस प्रकार है

निवोयामाय मानुषो दध्र उग्राय मन्यवे जिहीत पर्व्वतो गिरिः

मानुषः मनुष्य मात्र ने तुम्हें पापियों पर उग्र कोप करने के लिये नियुक्त किया है और तुम्हारी रणयात्रा के लिये पर्व्वत और मेघ रास्ता छोड़ देते हैं अर्थात् तुम पर्व्वतों को काट कर रास्ता बनाते हो और बादलों को व्योमयानों द्वारा चीर लेते हो. जैसा कि आगे (१२ वें मन्त्र में) कहा जायगा.

मन्त्र दस में इन्हें "गिरः सूनवः" कहा गया है अर्थात् वह वाणी के पुत्र हैं जिस प्रकार ब्राह्मण के लिये कहा गया है.

मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयम्मौञ्जिबन्धने। तृतीयं यज्ञदीक्षायां द्विजस्य श्रुतिचोदनात् ॥ मनु० २.१५६

इसी प्रकार न्यायदर्शन वात्स्यायन भाष्य में लिखा है—जायमानो हवै ब्राह्मण इतिशब्दो गृहस्थः सम्पद्यमानो जायमान इति। यदायं गृहस्थो जायते तदा कर्म भिरधि क्रियते मातृ तो जाय मान स्यानधिकारात्

न्यायदर्शन वात्स्यायन भाष्य ४ अध्याय १ आह्निक ६. सूत्र

27626

14.288.10

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक इसी प्रकार क्षत्रिय का जन्म जब वह सेना में भरती होता है उस समय समझना चाहिये क्योंकि उस समय वह प्रजा पीड़कों पर उग्र मन्यु करने की प्रतिज्ञा करता है अतः वह गिरः सूनु अर्थात् प्रतिज्ञा का पुत्र कहलाता है।

फिर इसी सूक्त के १२ वें मंत्र में उनका वर्णन इस प्रकार लिखा है—

मरुतो यद्ध वो बलम् जनां अचुच्यवातन गिरीं रचुच्यवीतन—

हे मरुत् लोगो तुम्हारा बल इस प्रकार का है कि पर्व्वतों को अपने स्थान से च्युत कर दे और विरोधियों को अपने आग्रह से च्युत कर दे, यहां "वः" बहुबचनान्त पद ध्यान देने योग्य है, मरुत् लोग जो कुछ करते हैं वह उनका गण करता है, वह अकेले यश नहीं चाहते जो करते हैं सब करते हैं।

आगे चलकर ३८ वें सूत्र के चतुर्थ मन्त्र में इस प्रकार वर्णन है।

यद्यय्म्पृश्नि मातरो मर्त्तासः स्यातन
स्तोतावो अमृतः स्यात्

हे पृथ्वि माता के पुत्रो यदि तुम मरते हो तो तुम्हारा मरना भी ऐसा चमत्कार युक्त होता है कि तुम्हारे गीत गाने वाले अमर हो जाते हैं। पृथ्वि का अर्थ निरुक्त अध्याय २ पाद ४ खण्ड १४ में सूर्य्य, तथा दयौः इस प्रकार दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी ओर शतपथ (१,८,३,१५ तथा ५।१,३,३) में पृथिवी ऐसा दिया हुआ है।

किन्तु ऋषि दयानन्द ने पृश्नि का अर्थ यहां द्यौः लिया है, इस में प्रमाण यह है कि पञ्चम मण्डल ५२ सूक्त में इन्हें दिवः मर्य्याः कहा गया है।

इस प्रकार पृश्नि मातरः का अर्थ द्यौः माता के पुत्र हुआ, इस में एक सुन्दरता यह भी है कि पृथिवी के पुत्र कहलाने पर वह पृथिवी के एक देश जिन्हें लोग मातृभूमि कह कर पुकारते हैं उनके पुत्र कहला सकते थे किन्तु आकाश में इस प्रकार की कोई हदवन्दी नहीं, इससे उनका सम्पूर्ण मानव समाज के प्रति अभिन्नरूप से कर्त्तव्य द्योतित होता है।

यह तो हुई निरुक्त तथा शतपथ की कथा, परन्तु सायण को क्या कहें जो इन्हें पृश्नि नामक गौ के पुत्र कहता है।

आगे इसी सूक्त में वर्णन करते हैं—

दिवा चित्तमः कृण्वन्ति पर्जन्येनोदवाहेन
यत् पृथिवीं व्युन्दन्ति (६ मन्त्र)

जब जलवर्षी मेघ से मरुत् लोग पृथिवी को आर्द्र करने लगते हैं तो दिन को अन्धेरा कर देते हैं।

वारुणास्त्र वा पर्जन्यास्त्र का मूल मन्त्र यही है, किन्तु मरुत् (मृग्रोरुतिः उणादि १. १९४) लोगों अर्थात् सैनिकों के साथ इसका सम्बन्ध और भी स्पष्ट है। यदि उदवाहेन को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्जन्येव का विशेषण न मानें तो और ही अर्थ हो जाता है अर्थात् वह दो प्रकार वृष्टि कर सकते हैं, एक कृत्रिम मेघों द्वारा दूसरे जलवाहक यन्त्रों द्वारा; कुछ भी हो, कृत्रिम वृष्टि का वेद में सैनिकों के सम्बन्ध में वर्णन स्पष्ट है।

अध स्वनान्मरुतां विश्वमासद्म पार्थिवम् अरेजन्त प्रमानुषाः ॥ १० ॥

मरुत् लोगों के (अपने अथवा शस्त्रास्त्रों के) स्वन अर्थात् नाद से वृक्ष लतागुल्म से लेकर मकानों तक जो कुछ धरती पर था और प्रतिपक्षी मनुष्य, सब कांप उठते हैं। यह भयङ्कर शब्द भी युद्ध का ही दृश्य उपस्थित करता है।

सप्तम मन्त्र में बिना मेघ वृष्टि का स्पष्ट वर्णन है—

सत्यंत्वेषा अमवन्तो धन्वञ्चिदा रुद्रियासः मिहं कृण्वन्त्यवाताम्।

यह विद्या से देदीप्यमान बलवान् रुद्र (सेनापति) के वीर मरुत् लोग मरुभूमि में भी वात रहित वृष्टि करते है अर्थात् जैसे मेघ से पहिले शीत पवनादि आते हैं वह कुछ नहीं, यह तो अपने कौशल से सीधी वृष्टि कर देते हैं। इस में सेना का जल प्रबन्ध कैसा होना चाहिए सो कैसा स्पष्ट वर्णन किया गया है।

आगे चल कर कहा है कि—

मरुतो वीळु पाणिभिश्चित्रा रोधस्वतीरनु यातेमखिद्र यामभिः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे सैनिको! बलवान् हाथों से और न थकने वाली यात्रा से विचित्र प्रकार की नदियों के किनारों पर भी चले जाओ। यहां यह वर्णन किया है कि सैनिकों के हाथ पैर बलवान् और अनथक होने चाहियें।

यहां ऋषि दयानन्द ने चित्राः पद के बल पर साधारण रोधस्वती से भिन्न योग समाधि में चित्र निरोध सहायक रोधस्वती अर्थात् नाड़ियों का ग्रहण किया है, सो आध्यात्मिक अर्थ वही है और वहां रोधस्वती का विशेष चमत्कार है; किन्तु हमारे अधिराष्ट्र अर्थ से उसका क्षेत्रभेद होने के कारण कोई विरोध नहीं।

आगे रथों का वर्णन है—

हे सैनिको! तुम्हारे पहिये मज़बूत तुम्हारे रथ अश्व अर्थात् आशुगामी और रथ के चलाने के यन्त्र बड़ी उत्तम रीति से बने हों।

स्थिरावः सन्तु नेमयो रथा अश्वास एषाम्
सुसंस्कृता अभीशवः ॥१२॥

यहाँ जो लोग वेद के शब्दों को यौगिक नहीं मानते वह अश्वासः का अर्थ क्या करेंगे—'हे मरुतो! तुम्हारे रथ घोड़े हैं'।

वन्दस्व मारुतं गणं त्वेषं पनस्यु मर्किणम्
अस्मे वृद्धा असन्निह ॥१५॥

इस सैनिकों के गण की वन्दना करो, यह दीप्तिमान् है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यशोधन हैं और वन्दनीय हैं। यह हमारा कल्याण करते हुए हमारे हित बूढ़े हों। यहाँ 'बूढ़े हों' इस वाक्य से मरुतों का मनुष्यत्व कितना सुप्रमाणित होता है।

अब उन्तालीसवें सूक्त में चलिये यहाँ सैनिकों का कितना सुस्पष्ट वर्णन है—

स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः १, ३९, २

हे मरुतो! शत्रुओं के भगाने और उनके आक्रमण सहारने के लिये तुम्हारे युद्धोपकरण बड़े स्थिर और बलवान् हों, तुम्हारी सेना स्तुति योग्य हो, परन्तु छली, कपटी, मायावी लोगों की सेना बलवान् न हो, ऐसा यत्न सदा करो।

नहि वः शत्रुर्विविदे अधिद्यवि न भूम्यां रिशादसः युष्माकमस्तु तविषी तना युजा रुद्रासो नूचिदाधृषे।

हे मरुतो! तुम्हारे शत्रु न तुम्हें धरती पर पा सकते हैं न आकाश में, अर्थात् दोनों प्रकार के युद्ध में तुम से घटिया हैं, तुम रिशादस् अर्थात् हिंसा के हिंसक हो। हे शत्रुओं को रुलाने वाले वीरों! तुम्हारी परस्पर सहयोगिता से तुम्हारी सेना सदा विस्तृत हो। यहाँ रिशादसः यह विशेषण देखने योग्य है। जो क्षत्रिय और कसाई में भेद नहीं समझते, वह देखें कि वेद क्या बताता है। वेद तो कहता है कि मरुतों का काम है—हिंसा को क्षीण करना; क्षत्रियों में बल मुर्गियाँ मारने से नहीं आता किन्तु परस्पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहयोग से, ईर्ष्या के अत्यन्त विजय से आता है। साथ ही इन्हें रुद्र कहा गया है आगे चल कर रुद्रस्य पुत्राः (म० ६ सू० ६६) भी कहा गया है। ऋषि दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्य में रुद्र का अर्थ सेनापति किया है, सो सैनिकों के लिये सेनापति के पुत्र यह विशेषण कितना सुन्दर है यह स्वयं विचारा जा सकता है।

असाम्योजो बिभृथ सुदानवो ऽसामिधूतयः शवः ऋषिद्विषे मरुतः परिमन्यव इषु न सृजत द्विषम् ३६, १५,

हे मरुतो! न तो तुम्हारा ओज ही अधूरा है और न तुम्हारा शत्रुओं को उखाड़ फेंकना अधूरा है। तुम्हारा ओज अधूरा कैसे हो जब तुम खुले हाथों दान करते हो। जो क्रोध में भर कर ऋषियों से द्वेष करे, उन्हें सतावे, उस पर तुम्हारा भी द्वेष पड़े और बाण की तरह सीधा पड़े।

आगे ६४वें सूक्त में उनका वर्णन इस प्रकार है—

ते जज्ञिरे दिव ऋष्वास उक्षणो रुद्रस्य मर्य्या असुरा अरेपसः पावकासः शुचयः सूर्य्या इव सत्वानो न द्रप्सिनो घोरवर्पसः

वह द्यौः अर्थात् राजधाम से उत्पन्न हुए हैं, वह बड़े देखने वाले (observant) हैं, लोगों पर सुख की वृष्टि करने वाले हैं, वह रुद्र के मनुष्य हैं, शत्रुओं को गिराने वाले और पाप रहित हैं, स्वयं शुचि हैं, दूसरों को पवित्र करने वाले हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य्य के समान असह्य प्रताप वाले, न फिसलने वाले और सत्व सम्पन्न हैं।

यहां 'मर्य्याः' पर सायण लिखता है कि 'क्यों कि उन में मनुष्यत्व असम्भव है अतः यहां 'मर्य्याः' का अर्थ पुत्राः लेना'। अब न जाने मुख्यार्थ वाद कहां गया!

आगे उनका वेष देखिये—

चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे व्यञ्जते वक्षः सुरुक्माँ अधियेतिरे शुभे। अंसेष्वेषां निमिमिक्षुर्ऋष्टयः साकं जज्ञिरे स्वधया दिवो नरः

यह देव लोक के आदमी अर्थात् राजपुरुष राजा को देव सम्बोधन अब तक संस्कृत साहित्य में प्रचलित है।

अन्न के साथ प्रकट हुए अर्थात् राज्य से उन्हें अन्न मिलता है और राजा की ओर से बने हुए सरकारी घरों से वह इस प्रकार प्रादुर्भूत होते हैं—

उनके शरीरों पर नानाधिकार व्यञ्जक चित्र अङ्क (Badges) लगे हुए हैं, छाती पर स्वर्ण के पदकादि भूषण हैं, कन्धों पर ऋष्टियाँ चमचमा रही हैं।

और लीजिये—

सिंहा इव नानदति प्रचेतसः पिशा इव सुपिशो विश्ववेदसः। क्षपोजिन्वन्तः पृषतीभिर्ऋष्टिभिः सामित्सबाधः शवसाहिमन्यवः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह सदा जागरूक मरुत् लोग सिंह के समान नाद करते हैं, हाथियों के समान जिनके अवयव सुडौल हैं, जिस वस्तु को प्राप्त करने का उद्योग करते है वही पालेते हैं, शत्रुओं को क्षपित करते हैं, जिनका क्रोध असह्य है और कष्ट में पड़े हुओं की एक साथ मिलकर अपने बल से, अपने शस्त्रों से, अपने तीव्र यानों से रक्षा करते हैं।

नवम मन्त्र में इन्हें शूराःगणश्रियः कहा है। शूर स्वयं हैं पर श्री गण की बढ़ाते हैं। हर एक के सामने अपने गण का यश है।

आगे उन के रथों का वर्णन है—

आ बन्धुरेष्वमतिर्नदर्शता विद्युन्नतस्थौ मरुतो रथेषु वः ॥ ६ ॥

सजे हुए रथों में तुम्हारी कान्ति बिजली के समान चमकती है। आगे दशम मन्त्र में इन्हें इषुअस्तारः तथा समोकसः कहा है।

एक ही घरों में रहने वाले और अस्त्र फेंकने वाले दोनों विशेषण सैनिकों के हैं।

अब प्रथम मण्डल के ८५ वें सूक्त में उन की रणयात्रा का वर्णन है।

प्र ये शुंभन्ते जनयो न सप्तयो यामन्रुद्रस्य सूनवः सुदंससः रोदसी हि मरुतश्चक्रिरे वृधे मदन्ति वीरा विदथेषु घृष्वयः ॥ ८५.१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे सेनापति के पुत्र युद्ध यात्रा के समय दुलहिन के समान सजे हुए तथा उत्तम घोड़े के समान युद्ध के लिये उत्कण्ठित होते हुए शोभा पाते हैं। वह शुभकर्म्मा मरुत् धरती और आकाश दोनों में वृद्धि के सामान उत्पन्न करते हैं, उनका स्वभाव सदा शत्रुओं से सङ्घर्ष करने का है, संग्राम में वह मस्त होते हैं।

यहाँ दो उपमा बड़ी विलक्षण हैं। ऋषि दयानन्द ने इसमें और भी चमत्कार उत्पन्न कर दिया है। सुदंससः के साथ मिला कर उन्हों ने अर्थ किया है कि 'सुशील स्त्रियों के समान वह वीर लोग' कदाचित् वीर पुरुषों की स्त्रियों से उपमा अल्पदर्शी लोगों को खटके, किन्तु सुशील विशेषण देकर ऋषि ने यह मार्ग खोल दिया है। जहाँ वह वीर युद्ध-यात्रा के लिये घोड़े के समान उत्सुक हों वहाँ शील में नई दुलहिन के समान मितभाषी हों। अपनी प्रशंसा सुनकर ऐसे लजाएं जैसे नवागत वधू मुहल्ले की स्त्रियों से प्रशंसा सुनकर लजाती है। सबके साथ व्यवहार में भी ऐसे ही मीठे हों। बहुत क्या कहें, शील और सजावट तथा उत्कण्ठा नव बधू की तथा शरीर में तेजस्विता ताज़े घोड़े की, इस से अच्छा वीर कहाँ मिलेगा। घोड़े की उपमा भी अपना ही रङ्ग रखती है। जिन्होंने कभी कोई सुपुष्ट, सुशिक्षित, सुसज्जित, युवा घोड़ा देखा हो वही इस उपमा की सुन्दरता समझ सकते हैं।

आगे चल कर कहते हैं—

त अक्षिता सो महिमानमाशत ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिषेक के समय उनमें एक महिमा प्रवेश कर जाती है। यहां वेद ने सैनिकों को सेना में प्रवेश करने की पद्धति बताई है। वैदिक कर्मों में सभी यज्ञों के आरम्भ में अभिषेक और अन्त में अवभृथ होता है, तो रण दीक्षा में अभिषेक क्यों न हो। महाभारतादि ग्रन्थों में सेनापति के अभिषेक का तो स्पष्ट वर्णन है। यही पद्धति बौद्धों ने सङ्घ दीक्षा में ली और उसी से ईसाइयों ने बपतिस्मा लिया। सिक्खों के पौहल में भी यही अभ्युक्षण होता है। मुसलमानों में अभ्युक्षण तो नहीं किन्तु दीक्षा से पूर्व स्नान उनमें भी है, सो यह वेदमूलक दीक्षा का जल से सम्बन्ध विश्व व्यापी है। सैनिकों की मारुत गण में दीक्षा लेते समय 'एक लोक कल्याणकारी गण का अङ्ग बनता हूं", इस प्रकार की गौरवान्वित भावना से मनुष्य की जो अवस्था होती है वह यहां 'महिमान माशत, इन शब्दों में किस सुन्दरता से अभिव्यक्त हुई है।

यहाँ मरुतों को पृथिवी माता के पुत्र कहा है—

गो मातरो यच्छुभयन्ते अञ्जिभिस्तनूषुशुभ्रा दधिरे विरुक्मतः ॥ ८५ । ३ ॥

यह धरती माता के पुत्र जब अलङ्कृत होते हैं तो अपने अपने पदाधिकार सूचक चिह्नों अथवा अपने न्यायादि उत्तम गुणों इन अपने अञ्जि अर्थात् अभिव्यञ्जक चिन्हों से शोभा पाते हैं।

यहाँ सैनिकों की स्वर्ण खचित (विरुक्मतः) वर्दियों का कैसा चित्र सामने आता है। हां वह किसी एक देश के नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पूर्ण धरती माता के पुत्र हैं। इन्द्र के काम्य गण हैं।

आगे उनका स्वरूप और स्पष्ट होता है—

विये श्राजन्ते सुन वास ऋष्टिभिः प्रच्यावयन्तो अच्युता चिदोजसा मनो जुवो यन्मरुतो रथेषु वृषव्रातासः पृषतीरयुग्ध्वम्।

जो उत्तम रणयज्ञ करने वाले मरुत् ऋष्टियों से शोभायमान होते हैं अपने ओज से अच्युतों को भी स्थानच्युत कर देते हैं जिनके समूह बड़े वृषा हैं अर्थात् सर्वत्र सुखवर्षी हैं ऐसे हे मरुतो! तुम अपने रथों में पृषतियों को जोड़ते हो।

यहाँ विवेचनीय है कि ऋष्टि क्या है तथा पृषती क्या है।

पहिले ऋष्टि को लीजिये, हमें यह ज्ञात हो चुका है कि वह कन्धों पर रक्खी जाती है। क्योंकि प्रथम मण्डल सूक्त ६४ में लिखा है कि **अंसेषुऋष्टयः** यही वर्णन म० ५ सूक्त ५४ म० ११ म० ५ सूक्त ५७ म० ६ म० ८ सू० २० म० ११ में लिखा है। दविद्युत ऋष्टयः उन की ऋष्टियें चमचमाती हैं।

प्रथम मण्डल सूक्त १६८ म० ३ में लिखा है **एषामंसेषु रम्भिणीव रारभे** अर्थात् उन के कन्धों पर ऋष्टि ऐसा शब्द करती है जैसे रँभाती हुई गौ।

मण्डल ५ सू० ६० म० ३ में लिखा है हे ऋष्टिमान् मरुतो तुम्हारी आवाज़ से द्यौ की चोटी तक कांप उठती है। **दिवश्चित् सानुरेजते स्वनेवः**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर लिखा है कि उन्होंने ऐसी ऋष्टियें बनाई हैं कि उनसे बिजलियां कौंदती सी हैं "ऋष्टीरसृक्षत अन्वेनां अहविद्युतो मरुतो जज्झतीरिव" म० ५ रि० ५२ म० ६

अब आप विचारें कि वह कंधे पर कौन सी चीज़ रक्खी होती है जो शब्द करती है और जिनके सम्मिलित शब्द से आकाश काँपता प्रतीत होता है।

कदाचित् आप कहें कि बन्दूक, वेद में सीसेन विध्यामः अथर्व्व १. १६. ४. का वर्णन भी है किन्तु मुझे तो यह कोई विद्युत् का यंत्र प्रतीत होता है जिस का अभी आविष्कार नहीं हुआ क्योंकि यहां लिखा है कि मरुत् जब जाते हैं तो पीछे बिजलियाँ कौंदती सी हैं।

फिर प्रथम मण्डल ८६ सूक्त नवम मन्त्र में लिखा है—

यूयं तत्सत्यशवस आविष्कर्त महित्वना विध्यता विद्युता रक्षः।

हे सत्यज्ञान रूप बल वाले मरुत् लोगों! तुम अपनी महिमा से वह आविष्कार करो कि विद्युत् से राक्षसों को मारो।

आगे चलकर आप पृषती के वर्णन में पाएंगे कि वेद विद्युत का प्रयोग बहुत बताता है। अतः यहाँ किसी ऐसे शस्त्र का वर्णन है जो कन्धे पर बन्दूक की तरह रक्खा जा सकता है किन्तु उस में प्रयोग विद्युत का होता है। आशा करता हूं कि कोई सोम किसी दिन इस का आविष्कार करेगा, अस्तु वह बन्दूक है अथवा वैद्युतिक बन्दूक है किन्तु शत्रुओं को मारने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का एक यन्त्र है जो कंधे पर रख कर सैनिक याम (march) करते हैं। क्योंकि लिखा है 'चित्रो वो यामः प्रयतासु ऋष्टिषु' अर्थात् कंधों पर ऋष्टि उठा कर चलते समय तुम्हारा याम बड़ा सुन्दर प्रतीत होता है।

इस प्रकार ऋष्टि का यथाशक्ति अर्थ निर्णय करके मैं पृषती पर आता हूं।

मण्डल १ सूक्त ३९ म० ६ में लिखा है—

उपारथेषु पृषती रयुग्ध्वम्

हे मरुतो! तुम अपने रथों में पृषतियें जोड़ते हो।

प्रथम मण्डल सूक्त ८५ मन्त्र चार में लिखा है—

मनोजुवो यन्मरुतो रथेषु स्वा-वृषव्रातासः पृषती रयुग्ध्वम्

हे मरुतो! तुम्हारे व्रात अर्थात् समूह सुख वर्षी हैं तुम अपने रथों में मन के सदृश वेग वाली पृषतियाँ जोड़ते हो।

फिर पाँचवे मंत्र में वर्णन है कि—

प्रयद्रथेषु पृषती रयुग्धम् वाजे अद्रिं मरुतो रंहयन्तः उतारुषस्य विष्यन्ति धाराश्चर्म्मेवोदभिर्व्युन्दन्ति भूम।

हे मरुतो! तुम जब युद्ध में प्रबल वेग से जाते हुए तथा पर्वत को लाँघते हुए अपने रथों में पृषतियों को जोड़ते हो तो उसमें से निकली धारा अरुष को अर्थात् व्रणकारी शत्रु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
२६६२६ पुस्तकालय १४
गुरुकुल कांगड़ी ६२

को काट देती है। और धरती को इस प्रकार गीला कर देती है जिस प्रकार चरसा जल से गीला करता है।"

अथवा यदि अरुष शब्द का सायण स्वीकृत विद्युत अर्थ करना हो तो इस प्रकार होगा कि "विद्युत की धारा जब चारों ओर मार काट मचाती हैं तो धरती को रुधिर से इस प्रकार गीला कर देती है जैसे चरसे की धारा जल से—

फिर पञ्चम मण्डल सूक्त ५५ मंत्र ६ में कहा है।

यदश्वान्धूर्षुपृषती रयुग्ध्वम् हिरण्ययान्

हे मरुतो! तुम अपने रथ की धूः में ज्योतिर्म्मय पृषती रूप अश्वों कों अथवा तीव्रगामी पृषतियों को जोतते हो।

अब यह ज्योतिर्मय पृषती इन्हें कहाँ कहाँ ले जाती है सो सुनिये।

न पर्व्वता न नद्योवरन्त वो यत्राचिध्वं मरुतो गच्छथेदुतत्। उत द्यावा पृथिवी याथना परिशुभं याता मनुस्था अवृत्सत॥

हे मरुतो! तुम जहाँ चाहते वहीं पहुँच जाते हो न तुम्हें पर्व्वत रोक सकते हैं न नदियाँ। चाहे पृथिवी पर चलो चाहे आकाश में और जब तुम शोभायमान होकर चलते हो तो तुम्हारे रथ तुम्हारी इच्छा के पीछे पीछे आते हैं।

फिर प्रथम मण्डल ८७ सूक्त मन्त्र दो में लिखा है—

आचिध्वंवयइव केनचित्पथा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरुतो ! तुम पक्षियों के समान जिस मार्ग से चाहो जा सकते हो।

अब यदि सायण ने जो पृषती का अर्थ हरिणी किया है वह किस प्रकार सङ्गत हो सकता है। विज्ञजन स्वयं विचारलें। हरिणी तो रथ को आकाश में पक्षियों की तरह उड़ाकर नहीं ले जा सकती परन्तु फिर भी ऋग्वेद म० १ सूक्त ३७ म० २ की व्याख्या में सायण कहता है। पृषत्यो बिन्दुयुक्ता मृग्यो मरुद्वाहनभूताः। भला यदि उसे मरुत् का अधिज्यौतिष अर्थ वायु ही लेना था तो पृषती का अर्थ नानावर्णा मेघमाला ही ले लेता। वह स्वयं लिखता है—

पृषत्यः श्वेतबिन्द्वङ्किता मृग्य इत्यैतिहासिकाः। नानावर्णा मेघमाला इति नैरुक्ताः। (म० १ सूक्त ६४ म० ८)

परन्तु न जाने नैरुक्त अर्थ को छोड़ कर उसने पेतिहासिक अर्थ क्यों स्वीकार किया। हमारा अर्थ यद्यपि नैरुक्त अर्थ से भिन्न है तथापि उससे विरुद्ध नहीं। नैरुक्त अर्थ जो आकाश में दृश्य दिखाता है वही वही हम राष्ट्र में समकक्षवाद के अनुसार दिखाते हैं।

अब हम इस का यथार्थ अर्थ निर्णय करते हैं। पृषत् शब्द का अर्थ है बिन्दु, पृषती का अर्थ हुआ बिन्दुमयी। अब आप स्वयं विचार लें कि यह बिन्दु (Sparks) बिन्दुमयी कौन सी शक्ति है जो रथ को जहाँ चाहे ले जासकती है। कहना नहीं होगा कि यह विद्युत है इसीलिये तो वेदने कहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आविद्युन्मद्भिर्मरुतः स्वर्के रथेभिर्यात ऋष्टिमद्भिरश्व पर्णैः। आवर्षिष्ठया नइषा वयो नपपृता सुमायाः।

हे उत्तम निर्माण विद्या के जानने वाले मरुत् लोगो! तुम विद्युत वाले सुप्रशंसनीय ऋष्टि युक्त तीव्रगामी अथवा जल स्थल, गगन तीनों में जाने में समर्थ होने के कारण व्यापक पंखोंवाले रथों से आओ और हमारे श्रेष्ठ अन्न के द्वारा आमन्त्रित होकर पक्षियों की तरह यथेच्छ मार्ग से उड़ते हुए आओ।

एक और उद्धरण इस प्रकरण में आवश्यक है। ऋग्वेद १, २३, १२ में लिखा है—

हस्काराद्विद्युतस्पर्य्यतो जाता अवन्तुनः।

अर्थात् विद्युत् के हस्कार से उत्पन्न हुए मरुत् हमारी रक्षा करें। इससे स्पष्ट है कि मरुतों का विद्युत से कितना गहरा सम्बन्ध है।

इस प्रकार पृषती तथा ऋष्टि का निर्णय करके हम अगले विशेषणों पर आते हैं।

आगे चलकर प्रथम मण्डल ८५ सूक्त मन्त्र आठ में लिखा है। भयन्ते विश्वा भुवना मरुद्भ्यः। अर्थात सब भुवन मरुतों से डरते हैं यह मरुतों के सैनिकत्व सिद्ध करने की शृङ्खला में एक और कड़ी है आगे मन्त्र ११ में लिखा है।

काम विप्रस्य तर्पयन्ति धामभिः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मरुत् अपने तेज से ब्राह्मण की कामना को पूरा करते हैं क्षत्रियों का गोब्राह्मण प्रतिपालक विशेषण यहीं से लिया गया।

आगे सूक्त १६ प्रथम मन्त्र में कहा है—

मरुतो यस्यहि क्षये पाथ....ससुगोपातमो जनः।

हे मरुतो! तुम जिसके घर की रक्षा करते हो वह निर्भय होकर गोपालन करता है और अतएव वह सुगोपातम हो जाता है।

आगे मन्त्र दो में कहा है।

यज्ञैर्व्वा यज्ञवाहसो विप्रस्य वा मतीनाम्। मरुतः शृणुता हवम्।

हे यज्ञ को पूर्णता तक पहुंचाने वाले यज्ञ वाहक मरुतो! तुम दो की पुकार सुनो। एक यज्ञ अर्थात् सङ्गठन की दूसरे ब्राह्मणों की बुद्धि की अर्थात् तुम इन दो से आदेश लो। उन में से भी यज्ञ मुख्य है क्यों कि तुम यज्ञ वाहक हो फिर दशम मन्त्र में कहा हैं।

गूहता गुह्यं तमो वियात विश्व मत्रिणम्। ज्योतिष्कर्त्ता यदुश्मसि।

हमारे राष्ट्र के गुह्य स्थानों की रक्षा करो। अन्धकार को तथा सम्पूर्ण वाह्य अदानशील राष्ट्र भक्षक शत्रुओं को दूर करो और जो प्रकाश हमें प्यारा है वह उत्पन्न करो।

सूक्त ८७ का प्रथम मन्त्र ही लीजिये—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्वक्षसः प्रतवसो विराप्शिनोऽनानताः अविथुरा ऋजीषिणः जुष्टतमासो नृतमासो अञ्जिभिर्व्यानञ्जे के चिदुस्राइव स्तृभिः

इसका सायण कृत अर्थ ही सुनिये—

प्रत्वक्षसः शत्रूणां प्रकर्षेण तनूकर्तारः शत्रुघातिनइत्यर्थः यतः प्रतवसः प्रकृष्ट बलोपेताः अतएव विराप्शिनः विविधेन जयघोषेणोपेताः अतएव अनानताः आनति रहिताः अविथुराः अवियुक्ताः ऋजीषिणः प्राजीर्यतारो रसानां जुष्टतमासः अतिशयेन यष्टृभि सेविताः।

यहां तक सब विशेषण योद्धाओं के देकर न मालूम उस पर क्या वज्रपात हुआ है कि नृतमासः में एक दम बोल पड़ा "अतिशयेन मेघादेर्नेतारः" बस एक विशेषण से एकदम कांटा बदल कर मरुत् का अर्थ वायु बना दिया।

आगे फिर ठिकाने आगया स्तृभिः स्वशरीरस्याच्छादकैः अञ्जिभिःरूपाभिव्यञ्जकै राभरणैः व्यानञ्जे नभसि व्यक्तादृश्यन्ते नभसि में फिर बिगड़ गया,

अब आप सीधा अर्थ सुनिये। शत्रुओं को जड़ से छील डालने वाले, महाबलयुक्त, विपुल जय घोष करने वाले, अनानत अर्थात् 'कट जाय सिर न झुकना' यह मन्त्र जपने वाले परस्पर, एक दूसरे का पूरा साहाय्य करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले, अपने भाग का रस उपार्जन करके खाने वाले, काम में दिनरात लगे हुए नरों में परम नर(Manliest of the men) यह मरुत् लोग अपने शरीर पर लगे हुए पदाभिव्यञ्जक चिह्नों से दूर से पहिचाने जाते हैं और सूर्य की किरणों की तरह चमकते हैं। आगे चलकर मन्त्र ४ में लिखा है 'युवा गणः' इससे पता लगता है बालकों को सेना में भरती नहीं करना चाहिये।

मन्त्र ६ में लिखा है 'अभीखवः' वह सर्वथा भय रहित हैं।

अब सूक्त १६५ पर आइये, यहाँ उनका क्या चित्र है सो भी देखिये।

सामने खड़ी सेना को देखकर स्तोता कहता है—

कया शुभा सवयसः सनीडाः समान्या मरुतः संमिमिक्षुः कया मती कुत एतास एतेऽर्चन्तिशुष्मं वृषणमेवसूया।

इन सुखवर्षी संसार के बसाने वाले (दुष्टों के उजाड़ने वाले) मरुत् लोगों ने हम पर क्या क्या सुखवृष्टियां की हैं। इनका रहने का घर एक, आयु एक, पोशाक एक, शान एक, क्या एक सी शोभा से हम पर यह सुख बरसाते हैं। इनके हृदयों में न जाने क्या क्या उमङ्गें हैं और न जाने कहां कहां से इकठ्ठे हुए हैं। ख़ैर, इनके हृदयों का पूरा भेद तो यही जानें परन्तु एक बात तो हम भी जानते हैं, इन सब का उपास्य देव एक है और वह है बल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस सूक्त में राजा तथा सैनिकों का जो परस्पर सम्बन्ध है वह पढ़ने योग्य है। दूसरे मन्त्र में इन्हें फिर 'युवानः' कहा गया है, साथ ही कहा है 'श्येनाँ इव ध्रजतो अन्तरिक्षे' हम बाज़ पक्षी की तरह इन्हें अन्तरिक्ष में जाता देखते हैं, सूक्त १६६ मन्त्र २ में इन्हें रुद्राः कहा गया है, फिर 'अन्यत्र रुद्रः रुद्रस्य रुद्रस्यमर्य्याः भी' कहा गया है, इस पर अधिक प्रकाश हम 'दशग्वाः' इस विशेषण की व्याख्या में डालेंगे।

फिर चौथे मन्त्र में 'स्वयतासः' विशेषण पड़ा है जिसका अर्थ है Self-disciplined. यह विशेषण सैनिकों में कितना सङ्गत है, आप स्वयं विचार लें।

पञ्चम मन्त्र में नर्य्याः विशेषण है, जिसका अर्थ है मनुष्य मात्र के हितकारी।

आगे चल कर मन्त्र ८ में लिखा है कि तुम शतभुजि द्वारा हमारी रक्षा करते हो। इसके साथ जब हम सूक्त ८९ मन्त्र सात में आए हुए 'अग्निजिह्वान्' इस विशेषण को तथा सूक्त ८८ में आए हुए—हिरण्य चक्रान् अयोदंष्ट्रान् विधावतो वराहून् इस वाक्य को मिलाते हैं तो ऋषि दयानन्द की शतघ्नी हठात् सामने आ खड़ी होती है। आप ही विचारिये कि इन शब्दों का क्या अर्थ है:—वह मरुत् वराहू अर्थात् शत्रुओं को मारते हैं, उनके यन्त्र शतभुजि अर्थात् सैकड़ों को खा जाने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। उनके ज्योतिर्मय चक्र हैं और लोहे की दाढ़ें हैं। यह क्या है, आप स्वयं विचार लें। और एक वर्णन सुनिए—

भूरीणि भद्रा नर्येषु बाहुषु वक्षःसुरुक्मा राभसासो अञ्जयः। अंसेष्वताः पविषु क्षुराअधि वयोन पक्षान् व्यनुश्रियोधिरे। सू० १६६. मन्त्र १०.

उनके मर्दाने रणवाँके बाहुओं में प्रजाओं का अनेक विध कल्याण, छाती पर बड़े २ समारम्भों (Achievements) के लिये प्रेरणा करने वाले कीर्ति व्यञ्जक स्वर्णपदक, कंधे पर उजली ऋष्टियाँ और वज्रों में छुरे भरे हैं। जब वह अपने (अर्थात् अपने रथों के) पंख फैलाते हैं (अश्वपर्णैः) तो ऐसे बांके लगते हैं जैसे आकाश में श्रेणी बद्ध उड़ते हुए पक्षी। यहां एक बात और विचारणीय है—यह वज्र में छुरे का क्या तात्पर्य्य है, क्या यह Shrapnell नहीं है।

आगे उनका विशेषण दिया गया है 'सम्मिश्लासः इन्द्रे' वह इन्द्र में घुले हुए हैं अर्थात् राष्ट्र का अङ्ग हैं और राष्ट्रपति के शासन से पृथक् उनकी कोई स्थिति नहीं।

अब ज़रा मरुतों के चरित्र की महिमा सुनिये—

आस्थापयन्त युवतिं युवानः शुभेनिमिश्लां विदथेषु पज्राम् अर्कोयद्वो मरुतो हविष्मान् गायद्गाथं सुतसोमो दुवस्यन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे मरुतो! यज्ञोत्सवों में आप के लिये नाना प्रकार के सार-भूत पदार्थ उपस्थित किये हुए आपका आदर करता हुआ नाना प्रकार के हविष्यान्नों से सम्पन्न आपकी अर्चना के लिए उत्सुक गृहपति जो आपका स्तोत्र गाता है वह इस प्रकार है कि तुम नाना प्रकार की उच्छृङ्खल चेष्टाओं के कारण भूत यौवन में पहुंचे हुए होकर भी उत्तम कर्म्म में प्रेम पूर्वक लगी हुई युवति को आस्था-पित करते हो अर्थात् आपको देख कर वह शत्रु समझ कर भयभीत होने के स्थान में द्विगुणित उत्साह से शुभ कर्म्मों में प्रवृत्त होती है।

गत महायुद्ध में योरोप में बीभत्स उन्मत्तता का जो नग्न ताण्डव हुआ था उसे देख कर कहा जा सकता है कि कम से कम वेद के इस सूक्त का पाठ तो प्रत्येक योरोपियन सिपाही को कराना आवश्यक है। आगे और सुनिये—

प्रतं विवक्मि वक्म्यो य एषां मरुतां महिमासत्यो अस्ति।
सचायदीं वृषमणा अहंयुः स्थिराचिज्जनीर्वहते सुभागाः।

अब मैं इन मरुतों की उस प्रशंसनीय महिमा का वर्णन करता हूं जो सत्य है। वह यह कि संसार पर सुखवर्षा करने की इच्छा वाली आत्माभिमान से भरी हुई स्थिर मनोवृत्ति वाली युवतियाँ भी इनकी सेवा में तत्पर हो कर सौभाग्य शाली सन्तान उत्पन्न करती हैं। यहाँ 'वृषमणाः अहंयुः और स्थिरा' तीनों विशेषणों में किस किस पर वारे जाइये, जिन्हें अब भी वेद का गौरव नहीं दीखता उनकी हिये की फूट गई हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे सूक्त १६८ में उनके लिये 'स्वजाः' 'स्वतवसः' विशेषण आए हैं। इसका अर्थ है कि वह स्वयं प्रसन्नता से सेना में आते हैं और अपनी शक्ति से आगे बढ़ते हैं। किसी की .खुशामद, सेवा और घूस से नहीं।

क्वस्विदस्य रजसो महस्परे क्वावरं मरुतो यस्मिन्नायय यच्च्यावयथ विथुरेव संहितं व्यद्रिणा पतथ त्वेष मर्णवम्।

हे मरुतो! इन लोकों के वार और पार में कौन सा स्थान है जहाँ तुम्हारी पहुँच नहीं। तुम अपने वज्र प्रहार से बड़े से बड़े जमे हुए दुर्गों को तृणों की तरह उखाड़ फेंकते हो। उस समय तुम दीप्तिमान् समुद्र अर्थात् पिघली हुई आग (Liquid-fire) बरसाते हो। और लीजिये—

प्रतिष्टोभन्ति सिन्धवः पविभ्यां यदभ्रियां वाच मुदीरयन्ति अवस्मयन्त विद्युतः पृथिव्यो यदीं घृतम्मरुतः प्रुष्णुवन्ति

जब शत्रुओं के अस्त्रों के जवाब में यह मरुत् आग बरसाते हैं तो इनके वज्रों से आग की नदियें निकल कर प्रतिघात करती हैं और उस समय मेघ की गर्जना के तुल्य शब्द होता है और पृथिवी पर बिजलियां चमचमाने लगती हैं।

वैद्युत तोप का इससे अच्छा वर्णन हो नहीं सकता। क्या मेरे सोमों में से कोई विद्युत् की तोप बनाएगा? मैं पूछता हूं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि यहाँ विद्युत के अस्त्र का वर्णन नहीं तो पृथिवी पर बिजली का चमकना कैसे ?

यहाँ मैंने सिन्धु का प्रचलित अर्थ नदी ले लिया है किन्तु मैं किसी अन्य व्याख्यान में सिद्ध करूँगा कि वेद में वाहिनी की तरह नदी वाची अन्य शब्द भी सेना के वाची हैं।

और स्पष्ट वर्णन लीजिये—

असूत पृश्निर्महते रणाय त्वेषमासाम्मरुता मनीकम् ते सप्सरासः।

वह मरुत् एक से रूप वाले हैं, उन्हें पृथ्वी माता ने भयङ्कर युद्ध करने के लिये जन्म दिया है, उनकी सेना देदीप्यमान है।

आगे सूक्त १७० में कहा गया है—

हे इन्द्र भ्रातरो मरुतस्तव

हे इन्द्र ! यह तेरे भाई हैं। मरुतों का मर्त्यत्व हम सिद्ध कर आए हैं इसलिये अधिराष्ट्र प्रकरण में इन्द्र भी मनुष्य होगा ; साथ ही राजा अथवा सेनापति का सैनिकों के प्रति क्या व्यवहार होना चाहिये, इस पर भी इससे प्रकाश पड़ता है।

आगे सूक्त १६२ में उन्हें तीन वार 'सुदानवः कहा गया' है। गीता में क्षत्रिय धर्म्मों में 'दानमीश्वर भावश्च' जो कहा गया है उसका मूल यही है। सैनिकों को दानशील भी होना चाहिये।

आगे मण्डल दो सूक्त ३३ में रुद्र को 'मरुतां पितः' कहा गया है। उसका वर्णन यों है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठो जातस्य रुद्रश्रियाऽसि तवस्तमस्तवसां वज्र-बाहो

हे वज्रबाहो रुद्र ! तू मां जाये मात्र में श्री के कारण श्रेष्ठ है, बलवानों में बलवत्तम है।

स्थिरेभिरङ्गैः पुरुरूप उग्रो बभ्रुः शुक्रेभिः पिपिशे हिरण्यैः

वह विशाल काय रुद्र अपने कठोर अङ्गों से देखने में बड़ा उग्र है, बभ्रु (sunburnt) तपः कपिश (स्नातक) चमकदार स्वर्णमय पोशाकों से आच्छादित किया जाता है।

आगे चल कर और कहा है—

स्तुहि श्रुतं गर्त्तसदं युवानं मृगनं भीमम् उपहत्नु मुग्रम्। मृडा जरित्रे रुद्रस्तवानोऽन्यं ते अस्मन्निवपन्तु सेनाः।

तू सभा मण्डप अथवा रथ पर बैठे हुए सिंह के समान हनन शील भयङ्कर युवा रुद्र की स्तुति कर। तू अपने स्तुति करने वालों को सुख दे। तेरी सेनाओं को हम पर आक्रमण करने का अवसर न आए।

आगे चल कर और सुनिये—

कुमारश्चित् पितरं वन्दमानं प्रतिनानानाम रुद्रोपयन्तम्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे रुद्र! तू जब सेनापति के पद पर खड़ा होता है तो यदि पिता भी तेरे पास आए तो वह तुझे वन्दना करता है और तू उसे प्रतिनमन करता है, चाहे तू हो कुमारभी। नियन्त्रण का क्या सुन्दर आदर्श है!

आगे सूक्त ३४ प्रथम मन्त्र में उन्हें 'धारावरः' कहा गया है। इसका अर्थ है कि वह धाराओं अर्थात् (Files) में चलते हैं। जैसे धाराएँ हों, ऐसे उनकी पंक्तियां खड़ी हैं।

आगे चल कर कहा 'रुद्रः वः अजनि पृश्न्याः ऊधनि' (म० २) अर्थात् रुद्र ने तुम्हें पृथिवी माता के ऊधस् से उत्पन्न किया है। पिछले रुद्र के वर्णन से आप समझ सकते हैं कि इसका अर्थ है कि सेनापति ने तुम्हें पृथिवी माता अर्थात् मनुष्य जाति के गर्भ से उत्पन्न किया है किन्तु सायण कहता है कि रुद्रने पृश्नि नामक गाय से तुम्हें उत्पन्न किया है।

यहां एक बात और विचारने योग्य है कि 'ऊधस्' से उत्पत्ति किस प्रकार होती है। इससे भी पता लगता है कि यह जनन औपचारिक है, वह पृश्नि माता के क्षीर पुत्र हैं।

आगे तीसरे मन्त्र में उन्हें 'हिरण्यशिप्राः' अर्थात् स्वर्ण-जटित यद्वा चमकदार पगड़ियों वाले कहा है।

आगे मन्त्र ६ में 'समन्यवः' कहा है अर्थात् वह अकेले अकेले क्रोध नहीं करते, जब मन्यु करते हैं तो वह समान होता है क्योंकि समान उद्देश्य (Common Cause) से होता है।

आगे मन्त्र ६ में उन्हें 'रुद्राः' कहा गया है। पिता रुद्र भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवा, वह स्वयं भी युवा, पैदा भी एक साथ हुए (साकं जाताः ५. ५५. ३) रुद्र के पुत्र हैं, स्वयं भी रुद्र हैं।

यह परस्पर विरुद्ध वाक्य कलाप क्या दिखा रहा है। यही कि यहाँ रुद्र स्थूल अर्थों में उनका पिता अर्थात् शुक्र शोणित सम्बन्ध द्वारा जनक नहीं किन्तु वह 'रुद्रस्य मर्य्याः' (१. ६४. २) अर्थात् रुद्र के आदमी हैं. तथा रुद्र अर्थात् सेना पति उनका इन्हीं अर्थों में पिता है जिन अर्थों में ब्रिटिश सेना में कर्नल अब भी सैनिकों को (my boys) कहता है। आगे मंत्र १२ में उनके लिये एक बड़ा मनोरञ्जक विशेषण आया है। विशेषण है 'दशग्वाः' इसका अर्थ है कि सैनिक दस दस की टोलियों में चलते हैं अर्थात् उनकी सब से छोटी टोली १० की होती है। अब ११ रुद्रों पर क्या अच्छा प्रकाश पड़ता है। १० रुद्र सैनिक और ११ वां सेनापति, इसी क्रम से ऊपर तक चले जावें इस से सेना का हिसाब रखने में कितनी सुगमता हो सकती है इस पर आप स्वयं विचार करलें, कदाचित् इसीलिये मनु ने भी ग्राम प्रबन्ध में यही दशमलव का विभाग रक्खा है।

ग्रामस्याधिपतिं कुर्य्याद्दश ग्रामपतिं तथा
विंशतीशं शतेशञ्च सहस्रपति मेवच। मनु ७-११५.

जिस दिन मैं गुरुदत्त भवन में इस सूक्त पर विचार कर रहा था मेरे वात्सल्य भाजन परम वेदनिष्ठ पण्डित प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति भी मेरे पास बैठे थे, मैं ने यह विचार सूझते ही उनसे कहा—हो न हो अक्षौहिणी की रचना भी १० पर थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने कहा कि देख लें: उसी समय अमरकोष मंगा कर देखा तो हमारे आश्चर्य्य और आनन्द का ठिकाना न रहा क्योंकि अक्षौहिणी का मूल घटक (Smallest unit) दश का ही है। यद्यपि ऊपर तक यह क्रम नहीं रहा तथापि मूल घटक १० होने से उसे जहाँ चाहें दश से भाग दे सकते हैं। अमरकोष का श्लोक इस प्रकार है—

'एकैकैकरथायश्वा पत्तिः पञ्चपदातिका'

अर्थात् सेना के सब से छोटे अङ्ग पत्ति में एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े तथा पाँच पैदल होते हैं और इसको तिगुना करने से आगे सेनामुख, गुल्म, गण, वाहिनी, पृतना, चमू, अनीकिनी, दशानीकिनी, अक्षौहिणी नाम होते हैं।

दशानीकिनी को तिगुना कहना कुछ खटकता है परन्तु जो भी हो, अमरकोष में यही विभाग दिया हुआ है।

अब १० सैनिकों में एक सेनापति जोड़ दीजिये, फिर देखिये कि ११ रुद्र किस अच्छी तरह समझ आ जाते हैं। फिर ऊपर तक दशों में एक सेनापति जोड़ते जाइये, रुद्र ११ रहेंगे क्योंकि मरुत् भी सब रुद्र कहे गए हैं। इसीलिये शतपथ ब्राह्मण में लिखा है—

ब्रह्मगायत्री क्षत्रं त्रिष्टुप्। श. १. ३. ५. ५.

और लीजिये—

त्रिष्टुप्छन्दा वैराजन्यः। तै. १. १. ६. ६

त्रैष्टुभोवैराजन्यः। ऐतरे १. २८. ८. २.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुद्रास्त्रिष्टुभम् समभरन् । जै. उ. १. १८. ५ ।
एकादशाक्षरावैत्रिष्टुप् । श. १. ३. ५. ५ ।

आगे सूक्त ३६ में उन्हें 'भरतस्य सूनवः' कहा है। पहिले उन्हें 'रुद्रस्य सूनवः' कह आये हैं, इससे स्पष्ट है कि भरत रुद्र का पर्य्याय वाची है इससे जो वेद में आए 'भरत' 'भोज' आदि शब्दों को वंश वाची बताते हैं उनके कथन की निस्सारता सिद्ध होती है। यहां तो बेचारे सायण को भी 'भरतस्य' का यौगिक अर्थ 'सकल लोक भर्त्तृ रुद्रस्य' ऐसा करना पड़ा है।

उन से कहा गया है 'आसद्यावर्हिः सोमं पिवत' आसन पर बैठ कर सोम पियो, यह वाक्य भी उन के मनुष्यत्व का द्योतक है।

सूक्त ३४ मंत्र १२ में 'मरुतों का वरूथ' कहा है। यह शब्द भी सेना का पर्य्यायवाची है। तीन प्रकार की सेना—

ये वावृधन्त पार्थिवा य उरावन्तरिक्ष आ वृजने वा नदीनां सधस्थे वा महोदिवः। मण्डल ५ सू० ५२ म० ६

जो मरुत् जहाँ चाहें पृथिवी में, इस विस्तृत अन्तरिक्ष में, नदियों के बल में अर्थात् जल में अथवा तीनों प्रकार की सेनाओं के दिव्य सहयोग में, जहाँ चाहें बढ़ जाते हैं।

आगे ९ मन्त्र में एक अद्भुत रहस्य का प्रकाश हुआ है। मन्त्र इस प्रकार है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उतस्मते परुष्ण्या ऊर्णा वसत शुन्ध्यवः। उत पव्या रथानामद्रिं भिन्दन्त्यो जसा'

वह कभी तो मद्गु पक्षी की तरह परुष्णी में अर्थात् कुटिल गामिनी नदी में छिप कर रहते हैं और कभी रथ के वज्र से अथवा पहिये से ओज द्वारा पर्वत को तोड़ गिराते हैं।

यहाँ मरुतों को शुन्ध्यु अर्थात् उदकचर पक्षी मद्गु से उपमा दी गई है। दुर्गाचार्य्य ने शुन्ध्यु का अर्थ मद्गु किया है। अब आप देखिये कि यहाँ मरुतों को मद्गु की तरह बड़ी से बड़ी कुटिलगामिनी नदियों में छिप जाने वाला भी कहा है और बाहर निकल कर अपने रथ के पहियों से पर्वत को तोड़ते हैं। मद्गु शब्द मस्ज धातु से (उणा० १.७) बना है, जिसका अर्थ है 'डुबकी लगाने वाला' अब हम इसी शब्द को यजुर्वेद अध्याय २४ म० ३४ में इस प्रकार पाते हैं—प्लवो मद्गुर्मत्स्यस्ते नदीपतये इसको उक्ताः सञ्चराः एताः (म० १७) के साथ मिलाइये, भाव यह हुआ कि हम ने नदीपति में सञ्चार के साधन यह तीन पक्षी बताए हैं—प्लव, मद्गु, तथा मत्स्य। प्लव तो जहाज़ को कहते ही हैं सो प्लव पक्षी को देख कर साधारण जहाज़ बने मद्गु को देख कर मद्गु जहाज़ बने, धात्वर्थ से स्पष्ट है कि मद्गु का अर्थ डुबकी लगाने वाला जहाज़ हुआ। ऊपर 'परुष्ण्यां ऊर्णाः कुटिलगामिन्यां तिरोहिताः' अर्थात् कठिन से कठिन नदी में छिप कर रहने का वर्णन है। अब हम संस्कृत साहित्य में मद्गु भी जहाज़ का नाम दिखाते हैं जिस से यह शृङ्खला पूरी हो जाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वह प्रमाण इस प्रकार है—

अस्मिन्नेवक्षणे नैकनौका परिवृतः कोऽपि मद्गु रभ्यधावत् (दश कुमार चरित षष्ठ उच्छ्वास)

इतने में अनेक नौकाओं से घिरा हुआ एक मद्गु हम पर आ टूटा।

इस मद्गु शब्द का अर्थ पदचन्द्रिका, भूषणा, लघुदीपिका, तीनों टीकाओं में 'मद्गुः पोत विशेषः' दिया है।

इसलिये यह परिणाम निकाल लेना दुस्साहस नहीं कि किसी समय वेद के सहारे शिल्प शास्त्रियों ने पानी में मद्गु पक्षी की तरह डुबकी लगा कर चलने वाला सञ्चार साधन विशेष प्रकार का जहाज़ अवश्य बनाया।

आगे चल कर १७ वें मन्त्र में सप्त सप्त अर्थात् ४९ गणों का वर्णन आया है। मरुतों के यह सात गण विवेचनीय हैं—

१. शुक्रज्योति, चित्रज्योति, सत्यज्योति, ज्योतिष्मान् शुक्र, ऋतया, अत्यंहाः।

२. ईदृङ्, अत्यादृङ्, सदृङ्, प्रतिसदृङ्, मित, साम्मित, सभर।

३. धृत, सत्य, ध्रुव, धरुण, धर्त्ता, विधर्त्ता, विधारय।

४. ऋताजित्, सत्यजित्, सेनाजित्, सुषेण, अन्तिमित्र, दूरे अमित्र, गण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. ईदृक्ष,एतादृक्ष,सदृक्ष,प्रतिसदृक्ष,मित,सम्मित, सभरस्।

६. स्वतवान्,प्रघासी सान्तपन, गृहमेधी, क्रीडी, शाकी, उञ्छी। यजुर्वेद, १७. ८०—८५ तक

सातवां विमुख मन्त्र में इस प्रकार दिया हुआ है—

उग्रश्च, भीमश्च, ध्वान्तश्च, धुनिश्च, सासह्वान्, अभियुग्वा, निक्षिप्।

यह सात गण यजुर्वेद में नहीं दिये गये, सातवाँ महीधर ने विमुख मन्त्र के नाम से दिया है जिसका अर्थ अपरिगणित मन्त्र प्रतीत होता है। हमारी सम्मति में तो बात यह है कि छः प्रकार के सैनिक तो वेद में गिना दिये हैं किन्तु सातवां गण छोड़ दिया गया है। इसका अर्थ है कि यह छः प्रकार के तो स्थिर सैनिक (Regular Soldiers) हैं और सातवें में साधारण प्रजा वर्ग है जो इन्हीं छः में बांट दिया जाता है जिस के विषय में ऋग्वेद में लिखा है—

कि विशं विशं युधये संशिशाधि।१०।८४।४

अर्थात् तू प्रजा के एक एक मनुष्य को युद्ध के लिये पैना कर। इसीलिये उसका पृथक् परिगणन नहीं किया गया उसे इन्हीं में डाल दिया गया है। इसी से यजुर्वेद में तथा शतपथ ब्राह्मण में वैश्यों के मरुत्व और ऋग्वेद में उनके सुक्षत्रत्व में जो विरोध दीखता है उसका परिहार होता है। इसका विशेष विवेचन वेदचतुष्टयी में मरुत् पर विचार करते समय करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनमें से—सान्तपन, गृहमेधी, स्वतवान्, प्रघासी, क्रीडी, शाकी, उज्जेषी यह सात मुख्य हैं क्योंकि इनका वर्णन ऋग्वेद में भी आया है। केवल 'उज्जेषी' के स्थान में 'रिशादस्' आया है। जिन्हें पर्य्यायवाची मानना चाहिये। यह ४२ अथवा ४९ गण क्या हैं, यह बात बहुत विचार माँगती है। इस पर मैं अभीतक किसी निश्चय पर नहीं पहुंच सका हूं। यह अपने सोम भाइयों के विचारार्थ छोड़ दिया है। मैं भी इस पर विचारूंगा परन्तु सम्भव है आप में कोई मुझसे भी अच्छा विचार कर सके। कहा भी है—'त्रैलोक्ये जय मन्विच्छेत् पुत्रादिच्छेत् पराजयम्' इसी मधुर पराजय की आशा से मैं ने यह विचार यहीं छोड़ दिया है।

अब पंचम मण्डल ५३ वें सूक्त में आइये। प्रथम मन्त्र को ही लीजिये—'को वेद जान मेषां'।

इनका जन्म किस कुल में हुआ है कौन जानता है। इसीलिये महाभारत में लिखा है—शूराणाञ्च नदीनाञ्च दुर्विदाः प्रभवा किल (महाभारत आदि पर्व)

इस से पता लगता है कि सैनिकों में जातपात का झगड़ा नहीं और जब वह एक सा वेश पहिन कर खड़े हों तो जान ही कौन सकता है।

ऐतान् रथेषुतस्थुषः कः शुश्राव कथा ययुः

इनके रहस्य इतने सुगुप्त (Well Kept) होते हैं कि कब रथ पर चढ़े और कब कहां चढ़ाई बोली, कौन जान सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कस्मै सस्रुः सुदासे यह किस सुदानी के पास जा रहे हैं। जो सुदास् को वेद में राज विशेष का नाम मानते हैं वह देखें कि यहाँ सायण ने भी सुदानाम यह यौगिक अर्थ ही माना है।

आगे मन्त्र ३ में स्पष्ट कहा है कि **नरोमर्ण्या अरेपसः इमान् पश्यन्नितिष्ठ**। हि तू इनको, 'पापरहित, मरणधर्म्मा नर हैं' ऐसा कह। आगे तेरह में कहा है—**एषां व्रातं व्रातं गणं गणं सुशस्तिभिः अनुक्रमेम**।

इनके व्रात व्रात और गण गण के पीछे सुशासन अथवा सुप्रशंसा चलती है, ऐसा आचरण हम करें। वह क्या करते हैं—

नस जीयते मरुतो न हन्यते न स्रेधति न व्यथते न रिष्यति नास्थराय उपदस्यन्ति नोतय ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ

हे मरुतो। तुम जिस ऋषि अथवा राजा का साथ देते हो वह न किसी से परास्त होता है, न मारा जाता है, न क्षीण होता है, न व्यथित होता है, न चोट खाता है और न उसकी सम्पत्ति क्षीण होती है। आगे चलिये—

'ग्राम जितो नरः'। वह समूहों को जीतते हैं तथा नर हैं। यहाँ सायण भी 'नराकाराः' ऐसा अर्थ करता है। और लीजिये—

प्रवत्वतीयम्पृथिवी मरुद्भ्यः प्रवत्वती द्यौर्भवति प्रयद्भ्यः। प्रवत्वतीः पथ्याः अन्तरिक्ष्याः प्रवत्वन्तः पर्वता जीरदानवः।६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन मरुतों की रण यात्रा के समय पृथिवी भी अनुकूल होकर रास्ता दे देती है, द्यौः भी रास्ता दे देती है तथा अन्तरिक्ष मार्ग और पर्वत भी अनुकूल हो जाते हैं।

सुयमेभिः अश्वैः। ५. ५५. ७१।

उनके घोड़े सुशिक्षित हैं।

साकं जातः साक मुक्षिताः। ३।

वह मरुत् एक साथ पैदा हुए हैं अर्थात् उनकी सैन्य दीक्षा एक साथ हुई है।

स्तोमैः समुक्षितानाम्। ५।

उनका अभ्युक्षण अर्थात् सैन्यदीक्षा स्तोम अर्थात् स्तोत्र पूर्वक हुई है।

रथं नु मारुतं वयं श्रवस्यु माहुवा महे। आयास्मिन् तस्थौ सुरणानि बिभ्रती सचा मरुत्सु रोदसी।

तं वः शर्धं रथेशुभं त्वेषं पनस्यु माहुवे। यास्मिन्सुजाता सुभगा महीयते सचा मरुत्सु मीढुषी।

इन दो मन्त्रों में युद्ध में जाने वाली स्त्री का वर्णन है। हम मरुत् लोगों के उस यशस्वी रथ का आह्वान करते हैं जिस में उत्तम रण साधन धारण करती हुई शत्रुओं को रुलाने वाली अपने पति रुद्रों की सेवा करने वाली पत्नी बैठी है। हे मरुतो! तुम्हारी उस देदीप्यमान स्तुति योग्य सेना को बुलाता हूँ जिसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखवर्षिणी सुजाता सौभाग्यवती सैनिक पत्नी अथवा स्त्री सैनिक की पूजा की जाती है।

अब उनका एक और हुलिया सुनिये—

वाशी मन्तः ऋष्टिवन्तो मनीषिणः सुधन्वानः इषुमन्तो निषङ्गिणः। स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातरः स्वायुधा मरुतो याथना शुभम्।

वह मरुत् वाशी नामक शस्त्र धारण किये हों, ऋष्टिधर हों, मनीषी हों, उत्तम धनुर्धारी हों, बाण वाले हों, तूणीर वाले हों, उत्तम घोड़े वाले हों और उत्तम रथ वाले हों। हे पृश्नि माता के पुत्रो! इस शान के साथ रण यात्रा करो।

यमाइव सुसदृशः सुपेशसः।

वह मरुत् जोड़ियाँ बच्चों के सदृश अत्यन्त समान रूप और सुन्दर वेश वाले हैं।

यहाँ सादृश्य (Uniformity) की पराकाष्टा हो गई, साथ ही यमाइव से यह भी स्पष्ट हो गया कि पहिले जो 'स्माकं जातः' कहा था वहाँ जातः का अर्थ गौण था, नहीं तो यदि इनका जन्म एक साथ हुआ होता तो 'यमाइव' क्यों कहते, 'यमाः' न कह देते।

आगे मन्त्र पाँच में कहा है 'अमृतं नाम भेजिरे' उन्होंने अमर नाम अर्थात् कीर्त्ति पाई है। आगे कहा है—

नरः अमृताः ऋतज्ञाः सत्यश्रुतः कवयः युवानः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अक्षय कीर्तिवाले तत्त्वज्ञ सत्यकीर्त्ति विद्वान् युवा मनुष्य हैं। इस से पता लगता है कि सैनिक सुशिक्षित होने चाहियें, अनपढ़ नहीं।

आगे ५८ सूक्त मन्त्र ३ को लीजिये—

यहाँ उनका विशेषण 'उदवाहासः आया हैं' अर्थात् वह पानी भी साथ उठा कर ले जाते हैं। यहाँ सेना के जल प्रबन्ध का स्पष्ट वर्णन है जो कि सरस्वती शब्द के समझने में बड़ी सहायता देगा। यहाँ 'उदवाह' का अर्थ पवन नहीं हो सकता क्यों कि साथ ही मन्त्र में 'कवयो युवानः' यह विशेषण पड़े हैं।

अब सप्तम मण्डल के ९५ वें सूक्त का पहिला मन्त्र लीजिये—

प्रक्षोदसा धायसा सस्रएषा सरस्वती धरुणमायसी पूः।

यहाँ सरस्वती को आयसी पूः अर्थात् लोहमयी नगरी कहा है। यह विशेषण इस शब्द के दो प्रचलित अर्थ—ज्ञान और नदी—दोनों से ही नहीं मिलता। निघण्टु में सरः जल का नाम है। यदि सरस्वती सेना का वह भाग मानें जो जल प्रबन्ध करता है तो आयसी पूः यह विशेषण सुसङ्गत हो जाता है।

आगे कहा है—हे मरुतो!

यूयं राजानं मिर्यं जनयथा जनाय विभ्वतष्टं जनय था यजत्राः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे संगठन के रक्षक मरुतो ! तुम प्रजा के लिये विद्वानों में श्रेठ मनुष्य को राजा बनाते हो । आगे उन के लिये 'रभिष्ठाः' विशेषण आया है, जिसका अर्थ है (Adventurous) महारम्भ तमाः । यही नहीं कि मरुत् युद्ध काल में ही काम करते हैं, वेद ने शान्ति समय में भी उनसे काम लेना बताया है ।

क्षोदन्त आपो रिणते वनानि । ५. ५८. ६

वह जल को खोद कर निकालते हैं और जङ्गलों को काट कर साफ़ करते हैं अर्थात् शान्ति समय में उनसे कूप, नहर आदि बनाने और जङ्गल साफ़ करने का काम लेना चाहिये ।

एषां भिय सा भूमि रेजति नौर्नपूर्णा क्षरति व्यथिर्यती । ५. ५६. २

इन मरुतों के भय से भूमि कांपती है और समुद्र की लहरों में जल पूर्ण नौका की तरह अभीष्ट पदार्थ झरती है ।

को वो महान्ति महता मुदश्नवत् कस्काव्या मरुतः कोह पौंस्या । ५. ५६. ४

हे मरुतो ! तुम महान् हो, तुम्हारे बड़प्पन तुम्हारी कीर्त्ति, तुम्हारी मर्दानगी को कौन अतिक्रान्त कर सकता है ।

स बन्धवः शूराइव प्रयुधः प्रोतयुयुधुः

वह सबन्धु (Comerades) हैं और युद्ध में इस प्रकार लड़ते हैं जैसे प्रयुध् शूर अर्थात् रणरङ्ग (Tourna-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ments) में शूर युद्ध कुशल लोग, अर्थात् वह इस निरपेक्षता से लड़ते हैं।

ते अज्येष्ठासअकनिष्ठास उद्भिदोऽमध्यमासो महसा विषा वृधुः सुजातासो जनुसा पृश्नि मातरः ५. ५९. ५

उनमें न कोई बड़ा है न छोटा, वह सब उन्नति शील हैं। यदि उनमें कोई बढ़ता है तो अपने तेज से, अपनी महिमा से। उन में जन्म का अभिमान कोई नहीं क्योंकि द्यौः अथवा पृथिवी माता के पुत्र होने के कारण जन्म सब का ही उच्च है।

व यो न ये श्रेणीः पप्तुः ५. ५९. ७

वह पक्षियों की तरह श्रेणी बद्ध होकर आकाश में उड़ते हैं। आगे तीन मन्त्रों का अनुवाद करने की आवश्यकता नहीं किन्तु उनके भाषा सौन्दर्य्य के कारण उनका उद्धरण किये बिना नहीं रह सकता।

अ.येतस्थुः पृषतीषुश्रुतासु सुखेषु रुद्रा मरुतो रथेषु वना चिदुग्रा जिहते निवो भिया पृथिवी चिद्रेजते पर्वतश्चित् पर्व्वतश्चिन्महि वृद्धो बिभायदिवश्चित् सानु रेजते स्वनेवः यत् क्रीडथ मरुतः ऋष्टि मन्त आप इव सध्र्यञ्चो धवध्वे वराइवे द्रैवतासो हिरण्यै रभिस्वधाभिस्तन्वः पिपिश्रे श्रिये श्रेयांसस्त वसो रथेषु सत्रा महांसि चक्रिरे तनूषु। ५-६०-२-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूल्हे की तरह सजे हुए हैं किन्तु निरे वस्त्र नहीं हैं 'स्वधाभिः' वह उनके स्व की रक्षा में भी समर्थ हैं अर्थात् आत्म-रक्षा की सब सामग्री से सुभूषित हैं।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एतेसं भ्रातरो वावृधुः सौ भगाय। युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः।

इनमें पूर्ण भ्रातृ भाव है, सौभाग्य के लिये मिलकर बढ़ते हैं। इनका युवा रुद्र इनकी रक्षा करने वाला पिता है और उत्तम दूध देने वाले सुदिन लाने वाली पृश्नि माता है।

आगे ६१ सूक्त में एक बड़ा सुन्दर संवाद है—

क्वोऽश्वाः काभीशवः कथंशेक कथायय पृष्ठे सदो नसोर्यमः। ६१। २।

तुम्हारे घोड़े कहां हैं, प्रग्रह कहां हैं, शक्ति कहां से पाते हो, जाते कैसे हो। उत्तर—हम स्वयं अपने घोड़े हैं, हमारी पीठ पर काठी है, हमारी नाक में प्रग्रह है, यही हमारी शक्ति का रहस्य है।

परावीरास एतन मर्य्यासो भद्रजानयः! अग्नितपो यथासथ।

हे उत्तम जाया के पति वीर मनुष्यो! तुम वारंवार हमारे पास लौट लौट कर आओ। तुम आग में तपे हुए के समान उज्ज्वल हो। 'उत्तम पत्नी का पति' यह प्रशंसा सूचक शब्द वेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में स्त्री जाति के प्रति क्या भावना दिखाता है, सो आप देखें।

आगे वेद इसका कारण बताता है कि उत्तम जाया उन्हें क्यों प्राप्त होती है।

उतत्वा स्त्री शशीयसी पुंसो भवतिवस्यसी अदेवत्रादराधसः।

जो न सज्जनों की रक्षा करे, न किसी को अन्न खिलाये, ऐसे पुरुषों से ग्लान होकर प्रशस्य स्त्री, हे वीर मरुत्! तेरे प्रति अधिक पास निवास करने की भावना वाली होती है।

यदि सायण कृत अर्थ को ठीक करना हो तो भी यों करना चाहिये कि उत्तम खरे खोटे की पहिचान वाली स्त्री ऐसे पुरुषों से कहती है कि—

हे अदेवत्र अराधस् कम्बख्त तुझसे तो वह स्त्री ही अच्छी है, तेरा पुरुष कहलाना व्यर्थ है। वह कौनसी स्त्री है, सो अगले मन्त्र में कहते हैं—

वियाजानाति जसुरिंवितृष्यन्तं विकामिनम्। देवत्रा कृणुते मनः।

जो कामातुर काम पिपासा के सताए हुए मनुष्य को ग्लानि जनक समझ के दिव्य गुण युक्त मनुष्य में मन लगाती है।

उतघा नेमो अस्तुतः पुमांइति ब्रुवे पाणि : सवैरदेय इत्समः।

वह मनुष्य अधूरा है चाहे वह अपने आपको 'मैं मर्द हूं'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा कहता है, इस प्रकार का पणबन्ध भी क्यों न करे फिर भी वह स्तुति योग्य नहीं, वह तो वैर करने योग्य शत्रु के सदृश है जो न देवत्राण करता है, न दान करता है।

आगे सैनिकों का संसार में कैसा आदर होता है, सो बताया है।

मैं एक विख्यात यश वाले विद्यावर्षी विद्वान् का यश सुनकर उनसे मिलने गया। मेरा हुलिया न पूछो, तमाम धूल पड़ी हुई थी और मैं श्याव हुआ हुआ था, परन्तु न जाने उसने मेरे मुख पर क्या भाव देखा, मुझसे निस्सङ्कोच होकर आनन्द से बोला, यह एक दो घोड़ों का रथ भी जुतवा दिया, रास्ता भी बता दिया और मैं पहुंच गया।

उत मेऽरपद्युव तिर्म्ममन्दुषी प्रति श्यावाय वर्त्तनिम्।
विरोहिता पुरुमीढाय येमतुर्विप्राय दीर्घं यशसे।

पञ्चम मण्डल ८७ सूक्त में फिर मरुतों का वर्णन है। यहाँ प्रथम मन्त्र में एक विशेषण 'गिरिजाः' आया है। सायण ने यहाँ 'मतयः' का अर्थ 'स्तुतयः' करके 'गिरिजाः' का अर्थ 'वाचि निष्पन्नाः' ऐसा किया है। मतयः का अर्थ स्तुतयः करने का कोई आधार नहीं, धातुपाठ में दो मन धातु हैं। एक दिवादि गण की मन ज्ञाने, दूसरी तनादि गण की मनु अवबोधने, इन दोनों में स्तुत्यर्थक एक भी नहीं। हां, गिरिजाः का अर्थ वाचि निष्पन्नाः ठीक है, परन्तु यहां भी सायण ने यह भूल की है कि इस शब्द को मरुतः का विशेषण न बना कर मतयः का बनाया है; किन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी मण्डल के ६१ सूक्त के १४ वें मन्त्र में आये हुए 'ऋत जाताः' शब्द के साथ मिलाने से यह विशेषण स्पष्ट रूप से मरुतों का बन जाता है, जिसका अर्थ बनता है वाणी से उत्पन्न हुए, अर्थात् मैं सैनिक धर्म्म पालन करूंगा। इस प्रकार के वाचिक व्रत धारण से निष्पन्न हुए हुए।

चौथा मन्त्र भी देखने योग्य है—

स चक्रमे महतो निरुरुक्रमः समानस्मात् सहस एवया मरुत् यदायुक्तत्मना स्वादधिष्णुभि र्विष्पर्धसो विमरुसो जिगाति शेवृधो नृभिः। ५। ८७। ४।

जब वह एवया मरुत् अर्थात् उद्देश्य तक पहुंचने के लिये मर मिटने वाला, बड़ी धूम धाम से सवारी निकालने वाला मरुत् सैन्य, अपने विशाल सामुदायिक निवास स्थान से निकलता है तो वह अपने मनुष्यों के द्वारा प्रजा के सुख का बढ़ाने वाला होकर चलता है और जब अपने पूरे आत्मा के साथ अपनी पूरी शक्तियों से बड़े बड़े प्रतिस्पर्धियों से युद्ध में संयुक्त होता है तो उन्हें विजय करके छोड़ता है।

यहां फिर उनके एक साथ बैठने की ओर निर्देश है। इस से वेद यह बताता है कि उनके रहने का स्थान एक है।

आगे मन्त्र ५ में मरुतों को स्वरोचिषः और स्वायुधासः कहा है, यह भी ध्यान देने योग्य है।

मण्डल ६ सूक्त ६६ में गणों के लिये धृष्णुषेणाः विशेषण आया है, अर्थात् उनकी सेना शत्रुओं को धर्षण कर देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे मन्त्र ७ में इसी सूक्त में कहा है—

अनेनोवो मरुतो यामो अस्त्वनश्वश्चिद्यमजत्यरथीः अनवसो अनभीशू रज स्तूर्विरोदसी पथ्या याति साधन।

हे मरुतो! तुम्हारी रणयात्रा ऐसी हो जिस में सारथी न हों, घोड़े न हों, पर वह चले। उसे बाहर से रक्षा करने की आवश्यकता न हो, उस में रश्मियें भी न हों परन्तु शत्रुधाम को तोड़ने में समर्थ हो और द्यावा पृथिवी के जो भी मार्ग हैं उनमें जहां चाहे जा सके, परन्तु हो अनेनाः अर्थात् पापरहित।

आगे मण्डल ७ सूक्त ५६ में उनका वर्णन सुनिये—

काईं व्यक्ता नरः सनीडा रुद्रस्य मर्य्याः अधास्वश्वाः।

यह उत्तम घोड़ों पर चढ़े हुए एक ही घोंसले के पक्षी, यह रुद्र के बाँके जवान, यह व्यक्त मनुष्य, यह क्या चीज़ हैं? इन्हें क्या कहिये?

न कि ह्येषां जनूंषि वेद ते अङ्ग विद्रे मिथो जनित्रम्।

इन का जन्म किस घर में हुआ है, कौन जाने? (पूछे कौन?) हाँ, वह आपस में तो कदाचित् जानते हैं।

सा विट् सुवीरा मरुद्भिरस्तु सनात् सहन्ती पुष्यन्ती नृम्णम्। मंत्र ५।

वह प्रजा शत्रुओं को सदा सहन करने में समर्थ होती है, धन बल युक्त होती है, जो मरुतों के कारण सुवीरा हो। यहां मरुत् और विट् में भेद स्पष्ट है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभ्रो वो शुष्मः क्रुदमी मनांसि धुनिर्मुनिरिव शर्धस्य धृष्णोः ।

हे मरुतो ! तुम्हारी शत्रुओं को धर्षण करने वाली सेना में परस्पर विरुद्ध बातों का कठिन सम्मेलन है। तुम्हारे मन तो क्रोध शील हैं पर बल निष्कलङ्क है। तुम्हारा संसार को कंपाना मुनि के समान मननपूर्व्वक चलने वाला है, अन्धाधुन्ध नहीं।

स्वायुधासः इष्मिणः सुनिष्काः उतस्वयं तन्वः शुम्भमानाः ॥११॥

उनके शस्त्र सुन्दर, शरीर चुस्त, वीरोचित आभरण मनोहरी और शरीर उस से भी मनोहर। गहने से शरीर की अथवा शरीर से गहने की, किससे किसकी शोभा बढ़ती है, क्या बताएं। उनके शरीर इतने सुन्दर हैं कि गहनों के मोहताज नहीं फिर अलङ्कार पहने हों तो कहना ही क्या।

ऋते न सत्यमृतसाप आयन् शुचिजन्मानः शुचयः पावकाः ।

वह सेना में प्रवेश करने के समय उदक स्पर्श पूर्वक जो व्रत धारण करते हैं तो वही उनका श्रेष्ठ जन्म है, साधारण स्थूल जन्म उनका कोई नहीं पूछता। वह ऋत और सत्य दोनों से युक्त हैं, स्वयं शुचि हैं, और दूसरों को पवित्र करने वाले हैं।

शिशवोन शुभ्राः वत्सासो न प्रक्रीडिनः पयोधाः ।१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालकों के समान निष्कलङ्क सुग्धस्वभाव और बछड़ों के समान सदा खेलते रहने वाले और दूध पीने वाले हैं।

आरेगोहानृहावधो वो अस्तु । १७

ए गो हत्यारो और सेना हत्यारो ! सुनो, तुम्हारी मार हम से दूर दूर रहे, मरुत हमारे रक्षक हैं।

मरुद्भिरुग्रः पृतनासु साह्वाः । २३ ।

उग्र अर्थात् राजा अथवा सेनापति, सेनाओं में मरुतों के द्वारा ही शत्रुओं की मार सहारता है।

आगे मन्त्र २४ में 'अपोयेन सुक्षितये तरेम' यह शब्द आते हैं इनका सायण कृत अर्थ सुनिये—

हे मरुतो ! हमारे अन्दर ऐसे वीर हों जिनसे 'सुक्षितये सुनिवासाय अपः आप्नुवतः शत्रून् तरेम हिंसेम' सुख पूर्वक निवास करने के लिये अपने ऊपर आते हुए शत्रुओं को मारें। यहाँ सायण ने अपः का जल अर्थ न करके जो अर्थ किया है वह मेरी इस स्थापना पर प्रकाश डालता है कि वेद में नदीवाचक शब्द सेना के पर्य्याय वाची समझने चाहियें।

आगे सूक्त ५७ मन्त्र १ में मरुतों को उग्राः कहा गया है। यह पहिले सूक्त में आए उग्र के सेनापति होने का अच्छा प्रमाण है। पहले रुद्राः और रुद्रस्य मर्य्याः कहा गया है, वही बात यहां है।

नैता वदन्ये मरुतो यथेमे भ्राजन्ते रुक्मै रायुधस्तै-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नूभिः आरोदसी विश्वपिशः पिशानाः समान मञ्ज्यञ्जते शुभेकम् । ५७. ३ ।

अपने स्वर्ण जटित वेशों से, अपने आयुधों, से अपने शरीरों से और कोई लोग इतनी शोभा नहीं पाते जितना कि यह मरुत् लोग । यह सारे विश्व को चमका रहे हैं, दैदीप्यमान हैं, शोभा के लिये एक सा वेश धारण किये हुए हैं, इन की क्या शोभा है !

बृहद् वयो मघवद्भ्योदधातः । ५८. ३

इन यशस्वी अथवा दानशील मरुतों के लिये बड़ी आयु का विधान करो अर्थात् ऐसे उपाय करो जिस से यह दीर्घजीवी हों । (अस्मेवृद्धा असन्निह १. ३८. १५)

युष्मोतो मविप्रो मरुतः शतस्वी युष्मोतो अर्वा-सहुरिः सहस्त्री । युष्मोतः सम्राडुत हन्ति वृत्रं प्रतद्वो अस्तु धूतयेदेष्णम् ।

हे शत्रु कंपक मरुतो ! तुम्हारी रक्षा पाया हुआ ब्राह्मण सैकड़ों विद्यार्थियों वाला हो जाता है, तुम्हारी रक्षा पाया आक्रमणकारी शत्रुओं की चोट सहारने वाला सहस्रों सैनिकों का सेनापति हो जाता है, तुम्हारी रक्षा पाया हुआ सम्राट् वृत्र अर्थात् पाप को मारता है, यह तुम्हारी अद्भुत दान शक्ति सदा स्थिर रहे ।

आहंसासो नील पृष्ठा अपप्तन् । ७. ५६. ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह मरुत् नीलवर्ण हंसों के समान आकाश मार्ग से आते हैं। मरुत् क्या करे, इस मन्त्र के साथ मरुतों के वर्णन की समाप्ति करते हैं।

यो नो मरुतो अभिदुर्हणायु स्तिराश्चित्तानि वसवो जिघांसति द्रुहः पाशान् प्रतिसमुचीष्ट तपिष्ठेन हन्मना हन्तनातम्। ७. ५

हे मरुतो! जो दुष्ट हृदय मनुष्य छिपकर हमारे अभीष्टों को मारना चाहता है, हे संसार के बसाने वालो! (न कि उजाड़ने वालो) तुम ऐसी चेष्टा करो कि वह हमें अपने द्रोह पाश से छोड़ दे और इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये अधिक से अधिक तपी हुई चोट से उसे मारो। परमात्मा हमें मरुत् उत्पन्न करने की शक्ति दे।

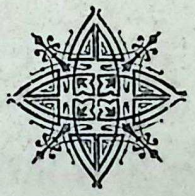

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है। इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर छै नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड लगेगा।

27626

१०००००.९.५६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar